(C-9 Assessment for ...

(1) ज्ञान (Knowledge) :- इसके अन्तर्गत वस्तुओं के प्रत्यास्मरण तथा अभिज्ञान की क्रियाओं को तथ्यों, शब्दों, नियमों सिद्धान्तों तथा सूचनाओं की सहायता से विकसित किया जाता है।
पाठ्यवस्तु की दृष्टि से इसके तीन स्तर है।

(i) विशिष्ट बातों का ज्ञान
(ii) विधियों तथा साधनों का ज्ञान
(iii) सामान्यीकरण नियमों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान ।

(2) अवबोध :- जिस पाठ्यवस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाता है उसका अपने शब्दों में अनुवाद करना, व्याख्या करना तथा उल्लेख करना आदि क्रियाऐं अवबोध उद्देश्य के स्तर पर की जाती है। अवबोध स्तर पर सम्बंध स्थापित करने पर बल नहीं दिया जाता किन्तु अवबोध के लिए ज्ञान का होना आवश्यक होता है।
~~इसके~~ इसके निम्नलिखित स्तर हैं।

(i) अनुवाद

Shot on Y91
vivo dual camera
2020.10.

उद्देश्य के निर्धारण में क्रियात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जाता है
जैसे - इतिहास की पाठ्यवस्तु में विज्ञान की पाठ्यवस्तु में नियम, विधियाँ तथा सिद्धान्त होते हैं और भाषा की पाठ्यवस्तु में शब्दावली साधन प्रयोग एवं नियम होते हैं।

शिक्षा के भावात्मक आयाम
(Affective dimension of Teaching)

पाठ्यक्रम में भावात्मक समायोजन एवं नियंत्रण को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। उसके व्यक्तित्व के विकास तथा मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष महत्व है। व्यक्ति के भावात्मक विकास को प्रभावित करने वाली स्थितियों को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है।
(i) व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास से उत्पन्न होने वाली आन्तरिक प्रवृत्तियाँ जो उसकी स्वयं की संकल्पना पर निर्भर करती हैं।
(ii) पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्ध जैसे - माता-पिता, बालक, मित्र मण्डली
(iii) इसके अन्तर्गत बाह्य निर्धारक आते हैं जो स्पष्ट एवं निश्चित

रूप नहीं किया जा सकता। ये ऐसे सामान्य निष्कर्ष होते हैं जो किसी शारीरिक उद्दीपक से उत्पन्न अनुक्रिया के रूप में होते हैं।
भावात्मक पक्ष के उद्देश्यों को पांच वर्गों में विभाजित किया जाता है।

(I) आग्रहण या प्राप्ति (Receiving)

(II) अनुक्रिया (Responding)
(III) अनुमूल्यन (Valuing)
(IV) व्यवस्थापन (Organising)
(V) मूल्य का लक्षण (Characterization)

Shot on Y91

(C-9 Assessment for ...)

(2) ~~[illegible]~~ निदान अर्थात कमजोरियों को जानने का प्रयास करना।
(3) शब्दों, नियमों को छात्र द्वारा अपने कथनों मे प्रयोग करना।

(4) विश्लेषण (Analysis) :- इसके अन्तर्गत किसी सूचना को स्पष्टता समझने के लिए उसके निर्माणकारी तत्वों में बाँटा जाता है अत: इसके लिए ज्ञान, अवबोध तथा अनुप्रयोग उद्देश्यों की प्राप्ति होना अति आवश्यक है।
इसमे पाठ्यवस्तु के नियमों, सिद्धान्तो तथ्यों तथा प्रत्ययो को तीन स्तरों पर प्रस्तुत किया जाता है।

(i) तत्वो का विश्लेषण करना।
(ii) सम्बन्धों का विश्लेषण करना।
(iii) व्यवस्थित सिद्धान्तो के रूप मे विश्लेषण करना।

(5) संश्लेषण (Synthesis) :- इसमे विभिन्न तत्वों तथा अंगों को एक साथ जोड़कर एक नवीन रूप मे ~~[illegible]~~ व्यवस्थित किया जाता है। इसके तीन स्तर है

Shot on Y91
vivo dual camera
2020.

(C-9 Assessment)

शिक्षा के ज्ञानात्मक आयाम
(Cognitive dimension of Teaching)

ज्ञानात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत बौद्धिक पक्ष आता है जिसका शैक्षिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्व है। विद्यालय में विद्यार्थी अपने वातावरण से कैसे सीखते हैं, अवधारणायें कैसे बनती हैं और विकसित होती हैं साथ ही इस पर ध्यान देना आवश्यक होता है कि बालक की अभिरुचि क्या है कि वह दूसरे व्यक्ति के साथ किस प्रकार व्यवहार करता है।

ब्लूम ने ज्ञानात्मक क्षेत्र में समाहित समस्त प्रक्रियाओं को छः वर्गों में विभाजित किया है।

(1) ज्ञान (Knowledge)

(2) अवबोध (Comprehension)

(3) अनुप्रयोग (Application)

(4) विश्लेषण (Analysis)

(5) संश्लेषण (Synthesis)

(6) मूल्यांकन (Evaluation)

Shot on Y91
vivo dual camera
2020

(2) पाठ्यवस्तु की व्याख्या करना
(3) उल्लेख करना

~~(3) अनुप्रयोग (Application) :- इसके अन्तर्गत अभिप्रेरणा तथा अवधान की सक्रियता एवं नियमितता की अपेक्षा की जाती है। इसके तीन स्तर हैं।~~

~~(1) अनुक्रिया की मौन स्वीकृति~~
~~(2) अनुक्रिया की सहमति~~
~~(3) अनुक्रिया से संतुष्टि~~

(3) अनुप्रयोग (Application) :- इसके अन्तर्गत अमूर्त संकल्पनाओं को मूर्त स्थितियों में प्रयुक्त करने तथा विभिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान पर पहुँचने की योग्यता सम्मिलित होती है। इसके लिए ज्ञान तथा अवबोध की आवश्यकता होती है।
इसके तीन स्तर होते हैं।

(1) नियमों, साधनों तथा सिद्धान्तों का चयन करना।

Shot on Y91
vivo dual camera
2020

(i) विभिन्न तत्वों के संश्लेषण में विशेष सम्प्रेषण करना।
(ii) योजना की उत्पन्न उत्पत्ति
(iii) अमूर्त सम्बन्धों का अवलोकन एवं निर्माण।

संश्लेषण को सृजनात्मक उद्देश्य भी कहा जाता है। इसमें छात्रों को अनेक स्रोतों से तत्वों को ज्ञात किया जाता है। इसमें विभिन्न तत्वों को मिलाकर नये ढांचा का निर्माण किया जाता है।

(6) मूल्यांकन (Evaluation) :- मूल्यांकन ज्ञानात्मक पक्ष का अंतिम एवं सर्वोच्च सर्वोच्च उद्देश्य है। इसके लिए निर्णय लेने के लिए आन्तरिक तथा वाह्य मानदण्डों का प्रयुक्त किया जाता है। इसके दो स्तर है।
(i) आन्तरिक प्रमाणों का मूल्यांकन
(ii) वाह्य मानदण्डों का मूल्यांकन

विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों के माध्यम से ज्ञानात्मक पक्ष का विकास किया जाता है तथा ज्ञान